❶

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

यवयास्मद् द्वेषो यवयारातीः।।

– यजु. 5/25

हे प्रभो! हमसे द्वेष के भावों और कृपणता को दूर करो।

O God ! Drive away hatred and thanklessness from our lives.

वर्ष 42, अंक 30 एक प्रति : 5 रुपये

सोमवार 17 जून, 2019 से रविवार 23 जून, 2019

विक्रमी सम्वत् 2076 सृष्टि सम्वत् 1960853120

दयानन्दाब्द : 195 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8

दूरभाष: 23360150 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com

इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस 21 जून पर विशेष

करें योग–रहें निरोग

भारत के कोने कोने में और विश्व के सौंकड़ो देशों में 21 जून, 2019 को "विश्व योग दिवस" अत्यन्त उत्साह के साथ मनाया गया। पांच वर्ष पूर्व संयुक्त महासभा में भारत के यशस्वी प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के प्रस्ताव को किसी भी दिवस के रूप में सबसे कम समय तीन महीने में ही पारित करते हुए 11 दिसंबर 2014 को घोषित कर दिया था कि 21 जून को अंतर्राष्टीय स्तर पर मनाया जाए। आज इस विशेष दिन को संपूर्ण विश्व में एक उत्सव के रूप में मनाया जाना पूरे भारत देश के लिए गौरव की बात है। आर्य समाज सदा से ही योग, यज्ञ और स्वाध्याय का पक्षधर रहा है और कहीं न कहीं यह महर्षि दयानंद और आर्य समाज की मान्यता एवं सिद्धांतों का व्यापक प्रभाव तथा विस्तार ही योग दिवस का रूप है। महर्षि पतंजलि ने अष्टांग योग में योगासनों को तीसरे तथा प्राणायाम को चौथे स्थान पर रखा है। जीवन की यात्रा को दिव्यता के उच्च शिखर तक ले जाने के लिए योगासन और प्राणायाम की क्रियाएं दैनिकचर्या के नियमित स्तम्भ हैं। योगासन एक मधुर शारीरिक व्यायाम है। योगासन करने से शरीर में ऊर्जा का प्रभाव बढ़ता है, जबकि और अन्य व्यायाम करने से शरीर में थकावट आती है। योगासन हमें शारीरिक रूप से ही स्वस्थ नहीं करते बल्कि योगासनों से मन–मस्तिष्क को भी ऊर्जा प्राप्त होती है। सुबह–सवेरे आधा घंटा योगासन करने वाला व्यक्ति पूरे दिन चौबीस घंटे ऊर्जा से भरपूर, चुस्त–दुरूस्त रहता है।

योगासन करते समय रहें सन्तुलित

योगासन करते समय अपनी मनोदशा को ठीक रखना बहुत आवश्यक है।

– शेष पृष्ठ 6 पर

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं गुरुकुल पौंधा (देहरादून) के संयुक्त तत्त्वावधान में

सात दिवसीय योग–साधना एवं स्वाध्याय शिविर सम्पन्न

दिल्ली, हरियाणा, उत्तरप्रदेश, उत्तराखंड, राजस्थान, महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़, बिहार, ओड़ीशा आदि राज्यों के महानुभावों ने लिया भाग

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं श्रीमद्दयानन्द आर्षज्योतिर्मठ–गुरुकुल पौंधा, देहरादून के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक 27 से 30 मई तक योग–साधना एवं स्वाध्याय शिविर एवं 31 मई से 1–2 जून 2019 तक गुरुकुल का वार्षिक उत्सव मनाया गया। जो कि सफलता के साथ विधिवत् सम्पन्न हुआ।

योग–साधना स्वामी चित्तेश्वरानंद सरस्वती जी द्वारा प्रतिदिन प्रातः एवं सायं सायं 5 से 6.30 बजे तक कराई गई। जिसमें आसन, प्राणायाम, संध्या एवं साधना सिखाई गयी जो साधकों के लिए अत्यंत उपयोगी रही। स्वाध्याय आचार्य डॉ. सोमदेव शास्त्री जी (मुम्बई) द्वारा कराया गया। इस वर्ष पंच महायज्ञ विधि (महर्षि दयानन्द कृत) का स्वाध्याय कराया गया। जिसमें चार दिनों में ब्रह्मयज्ञ का ही स्वाध्याय हो सका क्योंकि आचार्य जी ने ब्रह्म यज्ञ की विस्तार से व्याख्या करते हुए समझाने का प्रयास किया। फलस्वरूप स्वाध्याय उपस्थित सभी शिविरार्थियों को ठीक से समझ पाने में मदद मिली तथा सभी को बहुत लाभ हुआ। शेष यज्ञों को स्वाध्याय के आगामी शिविरों में किया जाएगा। इस वर्ष कुल 78 शिविरार्थियों ने शिविर में सहभागिता की। जिसमें दिल्ली, हरियाणा, उत्तरप्रदेश, उत्तराखंड, राजस्थान, महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़,

– शेष पृष्ठ 8 पर

योग साधना एवं स्वाध्याय शिविर में उपस्थित प्रशिक्षु एवं सम्बोधित करते संयोजक श्री सुखबीर सिंह आर्य, स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी डॉ. सोमदेव शास्त्री जी।

संघ लोक सेवा आयोग – सिविल सेवा परीक्षा में भाग लेने वाले आर्य युवाओं के लिए स्वर्णिम अवसर

महाशय धर्मपाल प्रतिभा विकास संस्थान द्वारा आर्य प्रतिभाओं को सहयोग एवं प्रशिक्षण

ऑनलाइन पंजीकरण आरम्भ :

आवेदन की अन्तिम तिथि : 22 जून, 2019

आर्यसमाज के शिक्षण संस्थानों/गुरुकुलों/सेवाकेन्द्रों/बालवाड़ियों, डी.ए.वी. संस्थानों/ विद्यालयों से शिक्षा प्राप्त ऐसे प्रतिभावान छात्र/छात्राएं जो वर्ष 2019–2020 में आयोजित होने वाली सिविल सर्विसिज परीक्षा में भाग लेना चाहते हैं किन्तु आर्थिक एवं मूलभूत आवश्यकताओं के अभाव के कारणों से परीक्षा की तैयारियां नहीं कर पा रहे हैं उन सब विद्यार्थियों के लिए आर्यसमाज की ओर से स्वर्णिम अवसर।

आर्यसमाज की सेवा ईकाई अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के अन्तर्गत 'महाशय धर्मपाल आर्य प्रतिभा विकास संस्थान' की ओर से राष्ट्रवादी विचारधारा वाले, आर्य शिक्षण संस्थानों से शिक्षा प्राप्त सुयोग्य पात्रों को आर्थिक सहयोग एवं परीक्षा तैयारियों के प्रशिक्षण देने की परियोजना तैयार की गई है। प्रवेश के लिए ऑनलाइन पंजीकरण आरम्भ हो गए हैं। आवेदन की अन्तिम तिथि 22 जून, 2019 है। पंजीकरण के लिए www.pratibhavikas.org पर लॉगइन करें। अधिक जानकारी के लिए मो. 9540002856 अथवा dss.pratibha@gmail.com पर सम्पर्क करें।

प्रतिभा आपकी – सहयोग हमारा

महाशय धर्मपाल आर्य प्रतिभा विकास संस्थान

यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा (IAS/IPS/IFS आदि)

की तैयारी कर रहे योग्य और मेधावी प्रतिभागियों की सहायता की घोषणा करता है।

चयनित अभ्यर्थियों को दिल्ली में छात्रावास, कोचिंग, प्रशिक्षण एवं मार्गदर्शन सहित सभी सुविधायें प्रदान की जायेगी।

इच्छुक उम्मीदवार ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं।

www.pratibhavikas.org

आवेदन करने की अंतिम तिथि - 22 जून 2019

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें :

9540002856 e-mail : dss.pratibha@gmail.com

समस्त आर्यजनों से निवेदन है कि इस सूचना को व्हाट्सएप्प, ट्वीटर, फेसबुक, टेलिग्राम आदि माध्यमों से प्रचारित–प्रसारित करें, ताकि अधिकाधिक प्रतिभावान विद्यार्थी आर्यसमाज की निःशुल्क सेवा का लाभ प्राप्त कर सकें। – *महामन्त्री*

वेद-स्वाध्याय

परमेश्वर की मित्रता में अभय प्राप्ति

सख्ये त इन्द्र वाजिनो मा भेम शवसस्पते
त्वामभि प्र णोनुमो जेतारमपराजितम्।।
ऋषिः जेता माधुच्छन्दसः।। देवता - इन्द्रः।। छन्दः अनुष्टुप्।।

शब्दार्थ - शवसस्पते = हे बल के स्वामिन्! **इन्द्र** = परमेश्वर! **ते** = तेरी **सख्ये** = मित्रता में आकर **वाजिनः** = बल-ज्ञान से युक्त हम **मा भेम** = अब भयभीत न हों, निर्भय हो जाएँ। **जेतारम्** = सदा जीतनेवाले **अपराजितम्** = कभी भी पराजित न हो सकनेवाले **त्वाम्** = तेरे प्रति **अभि प्रणोनुमः** = हम बार-बार सर्व प्रकार स्तुतिगान करते हैं।

विनय-हे परम ईश्वर ! तुम्हें अपना सखा जानकर अब संसार में और किसी से क्या डरना है! सब बल के स्वामी 'शवसस्पति' तो तुम हो। तुमसे बल-ज्ञान पाकर, 'वाजी' होकर डरना कैसा? तुम्हारा सहारा पकड़कर अब कैसा भय? अदूर भविष्य चाहे कितना अन्धकारमय दीख रहा हो, सामने चाहे कितना विकट सङ्कट आता दीखता हो, फिर भी हम निर्भय हैं, क्योंकि हम जानते हैं कि इस सबको यदि तुम चाहो तो एक क्षण में टाल सकते हो। जब तुमसे नाता जोड़ लिया, जब तुम्हारी राह में चल पड़े, तो दु:ख-पीड़ा, अर्थनाश, सम्बन्धियों का वियोग, जग-हँसाई आदि के सह लेने में क्या पड़ा है? तुम महाबली का नाम लेते हुए हम भारी-से-भारी अत्याचारों को हँसते-हँसते सहते जाते हैं। तुम्हारे प्यारे सच्चे मार्ग पर चलते हुए एक बार नहीं, लाख बार यदि मौत आये तो हम उसे भी आनन्दमग्न होकर स्वीकार करते जाते हैं। इनमें भय की क्या बात है? सचमुच, हे इन्द्र! तेरे सख्य को पाकर हम निर्भय हो गये हैं, दुर्लभ 'अभय' पद को पा गये हैं, अभय बन गये हैं, पर इस उच्च अभय-अवस्था को प्राप्त होकर भी, हे मेरे स्वामिन्! हम कभी मन में अभिमान को कैसे ला सकते है? क्या हम नहीं जानते कि संसार की सब विजय तुम्हारे बल द्वारा ही प्राप्त हो रही हैं, तुम ही संसार में एकमात्र जेता हो, विजयी होनेवाले हो? तुम्हें, तुम्हारी शक्ति को संसार में और कोई नहीं पराजित कर सकता। यह अनुभव करते हुए, हे मेरे सखा! ज्यों-ज्यों हममें तुम्हें पाकर आत्माभिमान बढ़ता गया है, त्यों-त्यों हममें तुम्हारे प्रति नम्रता भी बढ़ती गई है। ज्यों-ज्यों तुम्हारी कृपा से हममें अभयता आती गई है, त्यों-त्यों तुम्हारे चरणों में भक्ति भी बढ़ती गई है। इसलिए हमें अभयपद प्रदान करनेवाले हे प्रभो! हम तुम्हें प्रणाम करते हैं। हे जेत:! हे अपराजित! हम तुम्हारा स्तुति-गान करते हैं। तुम्हारा नित्य निरन्तर गुण-कीर्त्तन करते हैं। ओह! तुम्हारा गुण-कीर्त्तन करते हुए हम कभी नहीं थकते, हम कभी नहीं थकते।

-: साभार :-
वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक **प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

सम्पादकीय

क्यों उग्र हैं एशिया के बौद्ध भिक्षु?

भारत में भले ही देश के कई शहरों में गर्मी के कारण पारा 45-50 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया हो लेकिन इन दिनों भारत के पड़ोसी देश श्रीलंका में राजनितिक कहो या धार्मिक पारा अपने पूरे उफान पर है। म्यांमार की आग अभी ठंडी भी नहीं हुई कि श्रीलंका में इन दिनों जो चल रहा है वो भारत में जय भीम जय मीम का नारा लगाने वालों को सोचने पर विवश जरुर कर देगा। खबर है कि श्रीलंका में सभी नौ मुस्लिम मंत्रियों ने सरकार से इस्तीफा दे दिया है। इसके अलावा दो प्रांतीय गवर्नरों ने भी इस्तीफा सौंप दिया है। इन इस्तीफों से साफ हो गया है कि बौद्ध बहुल श्रीलंका में ईस्टर के दिन चर्च पर हुए हमले के बाद से सब कुछ ठीक नहीं है। इस हमले में 250 से अधिक लोग मारे गए थे।

ये इस्तीफे श्रीलंका के प्रभावी बौद्ध संन्यासी अथुरालिये रतना की भूख हड़ताल को देखते हुए दिए गये है इस प्रभावी बौद्ध संन्यासी ने, कई दिन पहले कहा था कि उनका यह आमरण अनशन है और जब तक मुस्लिम मंत्री इस्तीफा नहीं दे देते हैं तब तक यह जारी रहेगा। यही नहीं इस भूख हड़ताल पर बैठे बौद्ध भिक्षु के समर्थन में एक और बौद्ध भिक्षु गलागोडा अथे ज्ञानसारा आए थे, ज्ञानसारा बौद्धिस्ट पावर फोर्स मुहिम भी चलाते हैं। ज्ञानसारा ने सरकार को एक अल्टिमेटम देते हुए कहा था कि अगर सभी मुस्लिम मंत्रियों को उनके पद से नहीं हटाया गया तो पूरे श्रीलंका में तमाशा होगा।

आखिर शांति का सन्देश देने वाले ये वाले बौद्ध संन्यासी इतने उग्र क्यों हो रहे है? पहले म्यांमार में आसिन वेराथू फिर थाइलैंड, इसके बाद अब श्रीलंका में अथुरालिये रतना और ज्ञानसारा इन तीनों देशों में बौद्ध भिक्षुओं और मुसलमानों के बीच आखिर टकराव क्या है। कहीं ये इतिहास कोई जख्म तो नहीं जो रह-रहकर बुद्ध के इन अनुयाईयों को दर्द दे रहा हो?

असल में केवल श्रीलंका ही नहीं, दुनिया के कई देशों में बौद्ध और इस्लाम के बीच पिछले कुछ सालों में संघर्ष लगातार बढ़ा है। श्रीलंका में 2012 के बाद से बौद्ध आबादी, मुसलमानों को अपनी संस्कृति पर खतरा मानती है। मुसलमानों पर यहां बौद्धों के जबरन धर्म परिवर्तन के आरोप भी लगते रहे हैं और बौद्धों के अंदर इतिहास का दिया हुआ एक डर भी है कि उनके अपने देश में उनकी संस्कृति नष्ट हो जाएगी और उनका देश मुस्लिम बहुल देश बन जाएगा। मध्य एशिया, शिनजियांग, अफगानिस्तान और पाकिस्तान 7वीं-11वीं शताब्दी में इस्लाम के आने से पहले बौद्ध बहुल आबादी वाले देश रहे थे। इस्लाम ने इन देशों में जो घमासान मचाया था वह इतिहास की छाती पर गहरे जख्म के सामान है।

सन 1006 में तुर्की के मुस्लिम आक्रान्ता काराखनीद्स ने शिनजियांग के खोतान शहर पर कब्जा किया तो उनके एक मुस्लिम कवि ने एक कविता रची थी जो कुछ इस तरह थी कि हम एक बाढ़ की तरह आए और उनके शहर बहा ले गए, हमने बुद्ध की मूर्तियां-मंदिर तोड़ दिए और महात्मा बुद्ध का अपमान किया। शायद यह अपमान दोबारा न हो इसी डर का नतीजा म्यामांर, थाइलैंड और श्रीलंका में बौद्ध उग्र है।

कुछ समय पहले न्यूयॉर्क टाइम्स में एक बौद्ध भिक्षु ने रोहिंग्या मुसलमानों पर अपनी राय देते हुए कहा था, उन्होंने हमारी जमीन छीन ली, हमारा खाना छीन लिया, हमारा पानी छीन लिया। हम उन्हें कभी वापस स्वीकार नहीं करेंगे। क्योंकि उनके धार्मिक स्कूलों में दूसरों पर हिंसा और हमले करना ही सिखाया जाता है। हमारा साथ-साथ रहना बिल्कुल असंभव है। इसी दौरान बर्मा के एक स्थानीय अधिकारी ने तो यहां तक कह डाला था कि वे कई पत्नियों और बच्चों के साथ पागलों की तरह सिर्फ आबादी बढ़ाते जाते हैं।

लद्दाख में भी पिछले दिनों एक मुस्लिम लड़के और बौद्ध लड़की की शादी के बाद बौद्ध और मुस्लिमों के बीच संघर्ष देखने को मिला था। लद्दाख के स्थानीय मठ के प्रमुख लामा ने कहा था- मुस्लिम हमारा सफाया करने की कोशिश कर रहे हैं।

.......एक बौद्ध भिक्षु ने रोहिंग्या मुसलमानों पर अपनी राय देते हुए कहा था, उन्होंने हमारी जमीन छीन ली, हमारा खाना छीन लिया, हमारा पानी छीन लिया। हम उन्हें कभी वापस स्वीकार नहीं करेंगे। क्योंकि उनके धार्मिक स्कूलों में दूसरों पर हिंसा और हमले करना ही सिखाया जाता है। हमारा साथ-साथ रहना बिल्कुल असंभव है। इसी दौरान बर्मा के एक स्थानीय अधिकारी ने तो यहां तक कह डाला था कि वे कई पत्नियों और बच्चों के साथ पागलों की तरह सिर्फ आबादी बढ़ाते जाते हैं।..... 1193 में बौद्ध धर्म का केंद्र रहे नालंदा विश्वविद्यालय पर मुस्लिमों ने आक्रमण कर छिन्न भिन्न कर दिया। इसके बाद पूरे दक्षिण एशिया में मुस्लिम शासन स्थापित होने के बाद बौद्ध बहुल इलाकों जैसे अफगानिस्तान, स्वात, सिंध, पश्चिमी पंजाब, पूर्वी बंगाल कश्मीर में सबसे ज्यादा तेजी से बौद्ध धर्म को मानने वालों को शिकार बनाया गया।......

एक सदी पहले बौद्ध धर्म निर्विवाद रूप से दुनिया का एक बड़ा पंथ रहा था। इस्लाम का आक्रमण हुआ जिसके बाद बुद्ध के अनुयायियों को भारी नुकसान झेलना पड़ा। सन 1193 में बौद्ध धर्म का केंद्र रहे नालंदा विश्वविद्यालय पर मुस्लिमों ने आक्रमण कर छिन्न भिन्न कर दिया। इसके बाद पूरे दक्षिण एशिया में मुस्लिम शासन स्थापित होने के बाद बौद्ध बहुल इलाकों जैसे अफगानिस्तान, स्वात, सिंध, पश्चिमी पंजाब, पूर्वी बंगाल कश्मीर में सबसे ज्यादा तेजी से बौद्ध धर्म को मानने वालों को शिकार बनाया गया। मामला इतिहास तक सिमित नहीं है। 2 मार्च 2001 को अफगानिस्तान के बमियान में भगवान बुद्ध की दो विशाल मूर्तियों को मुल्ला उमर की तालिबानी सरकार ने बारूद लगाकर उड़ा दिया। इसके बाद मुल्ला उमर ने कहा कि "मुसलमानों को इन मूर्तियों के नष्ट होने पर गर्व करना चाहिए, इन्हें तोड़कर हमने अल्लाह की इबादत की है।"

यही कारण है कि बौद्ध और इस्लाम धर्म के मूल सिद्धातों को अलग रखकर इतिहास बौद्धों के इस्लाम के प्रति नजरिए को बयां करता है। इस्लाम के इतिहास ने बौद्धों के मन में एक ऐसा डर पैदा कर दिया है जिसे जल्दी निकाला जाना संभव नहीं है। आज भी बौद्ध बहुल और मुस्लिम अल्पसंख्यकों वाले देशों में शिक्षा, विकास, परिवार नियोजन पर जागरुकता फैलाने जैसे विचार भी इस्लाम मानने से इंकार कर देता है। इसके अलावा भी इस्लाम से जुड़े लोग अपनी मानसकिता दिखाने से नहीं गुरेज करते, इन देशों में बौद्ध लड़कियों को भी शिकार बनाया गया। दुनिया भर में मुसलमानों की सबसे बड़ी समस्या यह है कि वो कई देशों में अल्पसंख्यक होने के बावजूद भी वहाँ के संविधान से तालमेल नहीं बैठाना चाहते। वो किसी देश के संविधान के बजाए इस्लामी कानून पर अधिक विश्वास करते हैं। हो सकता है ऐसे कारणों से ही म्यांमार में 969 ग्रुप का संचालन आसिन बेराथु जैसे बौद्ध भिक्षु करने को खड़े हो जाते हो और श्रीलंका में अथुरालिये रतना और ज्ञानसारा जन्म ले लेते हो।

- सम्पादक

जीसस यूरोप के गरीबों की क्यों नहीं सुनता?

आमतौर पर गरीबी की परिभाषा यही समझी जाती है कि जिनके पास धन दौलत गाड़ी बंगले नहीं और मेहनत मजदूरी करने के बाद भी अपना जीवन यापन सही ढंग से नहीं कर पाते वो गरीब लोग होते है। माना जाता है ये सब चीजें हमारे रहन-सहन से जुडी होती है। इसे आर्थिक तंगी भी कहा जाता है। इस तंगी पर समाज शास्त्री राजनेता और सरकारें अपनी चिंता भी प्रकट करती है और इससे निपटने के लिए योजनाओं का निर्माण भी किया जाता रहा है। ताकि लोग समाज में बराबर हो उनका सशक्तिकरण हो और समाज को नई ऊंचाई प्रदान हो।

किन्तु एक गरीबी और भी हमें खाएं जा रही है वह है धार्मिक, आध्यात्मिक गरीबी यानि अभी भी लोग धर्म और भगवान बदल बदलकर देख रहे है ताकि उन्हें सब कष्टों से छुटकारा मिल जाये। चाहे इसके लिए कुछ भी करना पड़ें। जैसे अभी हाल ही की घटना देखें तो बिहार के गया जिले में डोभी थाना क्षेत्र के साहपुर गाँव में एक परिवार के द्वारा धर्म परिवर्तन कर ईसाई पंथ अपना लिया। जब उससे इसका कारण पूछा तो उसनें बताया कि हम लोग पहले बहुत परेशान थे, घर में भूत प्रेत का वास था सभी देवताओं की पूजा की लेकिन कोई भी फायदा नहीं हुआ तब हम लोग पंथ परिवर्तन कर लिए।

इसे आध्यात्मिक गरीबी कह सकते है क्योंकि इस परिवार के मुखिया संजय मांझी की माने तो भगवान सिर्फ हमारे आर्थिक फायदे और कथित भूत-प्रेत भगाने के लिए है। परिवार के मुखिया को कर्म पर विश्वास न होकर चमत्कार पर विश्वास ज्यादा हो गया था। इसी कारण पहले उसने अलग-अलग भगवानों की परीक्षा ली और फिर इस परीक्षा में पंथ ही बदल डाला। हो सकता है कुछ दिन बाद इसे भी छोड़ दे।

असल में देखा जाये तो पिछले तीन हजार सालों से जब लोगों ने वैदिक मान्यताओं को छोड़कर अंधविश्वास पाखंड और चमत्कारों में विश्वास करना शुरू किया तो तब से यह आध्यात्मिक गरीबी प्रवेश कर गयी थी। झूठ का सहारा लिया गया, गीता के साथ बाइबिल की तुलना की। यूरोप के लोगों को गौरवमंडित किया। लोग राजनितिक तौर पर तो गुलाम थे, आर्थिक रूप से गरीब थे, साथ ही हमारे धर्मग्रंथो में छेड़छाड कर आध्यामिक रूप से भी गरीब बना डाला। शर्म का विषय यह भी है कि इस काल खंड में हमारे धर्मगुरुओं ने भी इस पर ध्यान नहीं दिया बल्कि अपने निजी स्वार्थ और अर्थ लाभ के लिए मिलावटी झूठ को ही स्वीकार कर लिया। जिसका लाभ आज ईसाई मिशनरियों द्वारा बखूबी उठाया जा रहा है। जबकि जीसस के सम्बन्ध में कहा जाता है कि वह मांसहारी थे, शराब पीते थे क्या यह सब करने वाला कोई इन्सान धर्म और ध्यान की ऊंचाई को पा सकता है? बस यही उनके महापुरुष होने पर सवाल उठता है कि जो इन्सान अपने पेट की भूख मिटाने के लिए जो अपने कथित पिता के बनाए जीवों पर रहम न करता हो वह कैसे भगवान का पुत्र हुआ?

......क्या जीसस के अनुयायी मिशनरी जवाब दे सकते हैं कि अगर जीसस पानी पर चलता था तो वेटिकन के पोप को किसी छोटे-मोटे तालाब या स्वीमिंग पुल पर चलकर दिखा देना चाहिए। किसी चर्च के पादरी को दो चार फिट हवा में तैरकर दिखा देना चाहिए ताकि लोगों को पता चले कि ये जीसस के प्रतिनिधि हैं। क्योंकि बाइबिल कहती है जो जीसस पर विश्वास करेगा वो जीसस से ज्यादा चमत्कार करेगा। क्या आज ये समझा जाये कि पोप से लेकर दुनिया भर के पादरी जीसस पर विश्वास नहीं करते? ......

बावजूद इन उत्तरों के जीसस के अनुयायी जीसस की चमत्कारों से भरी कहानियाँ भारत के गरीब पिछड़े इलाकों में परोस रहे है। उन कहानियों में जीसस पानी पर चलता हैं, बादलों में उड़ता है हवाओं में तैरता हैं और मुर्दो को जिन्दा करता हैं। क्या जीसस के अनुयायी मिशनरी जवाब दे सकते है कि अगर जीसस पानी पर चलता था तो वेटिकन के पोप को किसी छोटे-मोटे तालाब या स्वीमिंग पूल पर चलकर दिखा देना चाहिए। किसी चर्च के पादरी को दो चार फिट हवा में तैरकर दिखा देना चाहिए ताकि लोगों को पता चले कि ये जीसस के प्रतिनिधि है। क्योंकि बाइबिल कहती है जो जीसस पर विश्वास करेगा वो जीसस से ज्यादा चमत्कार करेगा। क्या आज ये समझा जाये कि पोप से लेकर दुनिया भर के पादरी जीसस पर विश्वास नहीं करते? किन्तु दुखद बात है कि आध्यामिक रूप से गरीब भारत का एक तबका यह बात समझ नहीं पा रहा है और इन झूठी कहानियों में फंसकर वेटिकन का गुलाम बनता जा रहा है।

ईसाइयों की पुस्तक कहती है कि जीसस ने एक लाश को जिन्दा किया जिसका नाम लजारस था। भला सोचने की बात है लोग तो रोज मरते थे, जीसस के सामने उनके परिवार के लोग मरें, खुद उन्हें भी सूली पर टांग दिया सिर्फ एक को जिन्दा किया और जिसे जिन्दा किया वह उनका खास मित्र लजारस था। लेकिन इसके बाद भी लोग सोचना समझना नहीं चाहते। जो कोई कुछ भी कह देता है उसी पर विश्वास कर लेते है। इनकी इस नासमझी का लाभ वो बड़े मजे से उठाते है। इसी कारण ईसाई मिशनरीज के चेहरों पर मुस्कान छा जाती है। और इन्हें धार्मिक शिकार बनाया जाता है। इन्हें बताते है कि जीसस के कारण तुम्हारी दरिद्रता दूर तुम्हारा दु:ख दूर हो सकता है। लेकिन लोग भूल रहे है कि आज भी अमेरिका और यूरोप में लाखों भिखारी है भला जो दुनिया के दूसरे देशों में जाकर गरीबों को ईसाई बनाने में लगे है वो अपने भिखारियों के लिए कुछ भी नहीं कर पाए, न जीसस उनकी दरिद्रता दूर कर पाया न मरियम। शायद यही कारण है कि अब यूरोप के लोग गिरजाघरों से दूर भाग रहे है।

देखा जाये तो आज ईसाईयत पुराने कपड़ों की तरह हो गयी पहले यूरोप और अमेरिका के लोगों ने पहनी आज जब वह मैली हो गयी तो एशियाई देशों में बांटी जा रही है। पहले ईसाइयत के माध्यम से जीसस से उनके दुखड़े दूर करने के प्रलोभन दिए जाते है। फिर इन गरीबों का भार देश के सरकार पर डालते हुए इनके लिए आरक्षण इत्यादि की मांग करने लगते है। मसलन पहले इनकी गरीबी का कारण हिन्दू धर्म होता है और जब ये धर्मान्तरित हो जाते है तब इनकी दरिद्रता का कारण सरकारे हो जाती है ताकि जीसस को बचाया जा सके, उसकी भगवत्ता पर कोई सवाल न उठ सके। बस यही एजेंडा देश में चल रहा है और संजय मांझी जैसे लोग अशिक्षा के कारण ईसाईयत का यह प्याला पी रहे है, यही देश की आध्यामिक गरीबी है। क्योंकि जिस जीसस को ये लोग ईश्वर समझ रहे है वह ईश्वर नहीं है। और जो ईश्वर है उसका इन्हें पता ही नहीं कि वह एक निराकार शक्ति है जो समस्त ब्रह्माण्ड को संचालित कर रही है।

- राजीव चौधरी

प्रेरक प्रसंग

महात्मा हंसराज - मर्यादा पुरुषोत्तम

हम आर्यलोग श्री रामचन्द्रजी महाराज को मर्यादा पुरुषोत्तम कहते हैं। 'मर्यादा पुरुषोत्तम' व श्रीराम पर्यायवाची शब्द बन गये हैं। वास्तविकता यह है कि बड़ा बनने के लिए, ऊँचा उठने के लिए मर्यादाओं की सीमा में चलना पड़ता है और जो पुण्य-आत्माएँ बहुत ऊँचा उठती हैं, वे सब मर्यादाओं को स्थापित करती हैं।

महात्मा हंसराजजी भी एक ऐसे ही महापुरुष थे। वे भी मर्यादा पुरुषोत्तम थे। अर्थशुचिता, तप, त्याग व शिष्टता में उनका आचार-व्यवहार हमारे लिए एक उदाहरण है, एक मर्यादा है।

सन् 1919 ई. की घटना है। श्रीयुत महात्मा हंसराजजी पिंडी सैयदाँ जिला झेलम (पाकिस्तान) में डी. ए. वी. स्कूल का शिलान्यास रखने के लिए पधारे। थोड़ी दूरी पर जलालपुर कीकनाँ ग्राम पड़ता है। वहाँ के श्रद्धालु आर्यपुरुष वहाँ आये हुए थे। उन्होंने आग्रह किया कि जाते-जाते हमारे यहाँ भी चरण डालकर, हमारे मान को बढ़ावें। महात्माजी ने भक्तों की विनीत विनती स्वीकार की और चल पड़े। सड़क ठीक न थी। स्थान-स्थान पर गड्ढे थे। महात्माजी सहर्ष पैदल चलते गये। ग्रामवालों ने बाजे-गाजे से सोत्साह स्वागत किया। आर्यसमाज मन्दिर में स्थान तंग था। वहाँ स्वर्णकारों की धर्मशाला में 'यज्ञों की महत्ता' पर आपने व्याख्यान दिया।

व्याख्यान के पश्चात् मण्डी बहाउद्दीन के मार्ग से लाहौर लौटना था। मार्ग रेतीला था, इस कारण ठीक न था। बड़ी कष्टप्रद यात्रा थी। सवारी के लिए घोड़े का प्रबन्ध किया गया। कुछ दूर तक घोड़ेवाला साथ-साथ चलता रहा। महात्माजी को पता चला कि घोड़ा उनके लिए है।

आपने घोड़ा वापस भेजने का प्रबल आग्रह किया। भक्तों ने भी आग्रह किया कि आप घोड़े पर चढ़ें। आपने कहा कि मैं यह अनुमति नहीं दे सकता कि आप मेरी सुख-सुविधा पर धन का अपव्यय करें। फिर कहा-यह कहाँ की शिष्टता है कि आर्यभाई तो पैदल चलें और मैं घोड़े पर सवार होकर चलूँ। मैं पिण्डी सैयदाँ से जलालपुर कीकनाँ आर्यभाईयों के साथ पैदल गया था, इसी प्रकार आर्यमहाशयों के साथ अब मण्डी बहाउद्दीन भी पैदल ही चलूँगा। मुझे इसी में आनन्द की अनुभूति होती है।

जब बड़े-छोटे में ऐसा प्यार हो, जब नेता लोग आडम्बरों का परित्याग करें, जब नेता लोग अपने व्यवहार से जन-जन के साथ आत्मीयता का परिचय दें, तभी संगठन सुदृढ़ होता है। महापुरुषों का ऐसा आचरण सामाजिक भवन के लिए सीमैण्ट का कार्य करता है। अपने ऐसे व्यवहार के कारण महात्मा हंसराज मर्यादा पुरुषोत्तम कहलाने के अधिकारी बने। आवश्यकता है कि हम इस मर्यादा का पालन करके दिखावें। आज डी.ए.वी. वालों का आचरण ठीक इसके विपरीत है। जन धन से गाड़ियाँ लिए मौजें करने में इनका बड़प्पन है। ये लोग आकण्ठ भ्रष्टाचार हैं।

- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु
साभार :
तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के आह्वान पर विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर 2-3-4-5 जून को सम्पन्न

सार्वजनिक स्थानों पर पर्यावरण शुद्धि यज्ञों चित्रमय झांकी

आर्यसमाज गोविन्दपुरी द्वारा पार्कों में यज्ञ

आर्यसमाज न्यू मोती नगर में यज्ञ

आर्यसमाज अशोक विहार-1 द्वारा 51 कुण्डिय

तिलक नगर पुलिस थाना आवासीय परिसर

आर्यसमाज कीर्ति नगर द्वारा यज्ञ भजन प्रवचन

आर्यसमाज विकास नगर

आर्यसमाज नत्थु पुरा

आर्यसमाज शकरपुर विस्तार

आर्यसमाज माया पुरी

आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश-1 सैन्ट्रल पार्क

आर्यसमाज केशव पुरम्

आर्यसमाज गुरुकुल कांगड़ी

आर्यसमाज कोटा (राजस्थान)

पूर्वोत्तर के आदिवासी क्षेत्रों में संचालित आर्य शिक्षण संस्थानों का निरीक्षण एवं बैठकें

अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ द्वारा असम एवं नागालैंड में संचालित विद्यालय, गुरुकुल तथा आश्रम आदि के 3 दिवसीय दौरे पर राष्ट्रीय महामंत्री जोगेन्द्र खट्टर एवँ दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री विनय आर्य गुवाहाटी होते हुए कार्बी आंगलांग के बोकाजान पंहुचे। सभी अधिकारियों एवँ स्टाफ से बैठक के बाद उत्तरपूर्व राज्य के मैनजर रामशंकर शिरोमणि एवँ आचार्य संतोष के साथ डिफू आश्रम के दौरे पर चल दिये, जोकि दो घन्टे की दूरी पर है वहां के संचालक हर सिंह हंसे एवँ स्टाफ के साथ चर्चा की।

अगले दिन बोकाजान के छात्र छात्राओं के साथ यज्ञ करने के बाद धनसिरी असम के विद्यालय का निरीक्षण, अभिभावकों, स्टाफ एवँ धनसिरी के निवासियों के साथ लम्बी बैठक का दौर चला तत्पश्चात अगले दिन बोकाजान के विद्यालय का निरीक्षण एवँ अध्यापकों के साथ बैठक के बाद दीमापुर नागालैंड के विद्यालय का निरीक्षण के साथ ही नागालैंड के सांसद तोखेतो महोदय से भेंट की। इस पूरी यात्रा में डॉ रामशंकर शिरोमणी, आचार्य संतोष, गंगा जी राकेश, उत्तर पूर्व राज्य के मंत्री लीलाबोरा, परमेश्वर साहू,पांडेय जी एवँ सभी विद्यालयों के प्रधानाचार्यो एवँ सभी स्टाफ का भरपूर सहयोग मिला।

- जोगेन्द्र खट्टर, महामन्त्री

ओम प्रेमसुधा दयानन्द आर्य विद्या निकेतन, बोकाजान के बच्चे, अध्यापिकाएं एवं अधिकारी प्रार्थना करते हुए

बोकाजान स्थित कन्या छात्रावास में यज्ञ करतीं छात्राएं

डीफू स्थित जनजाति छात्रावास के बच्चों एवं कार्यकर्ताओं के साथ अधिकारीगण

नागालैंड के सांसद श्री तोखेतो के साथ श्री विनय आर्य जी, श्री जोगेन्द्र खट्टर जी एवं श्री सन्तोष शास्त्री जी

विद्यालय जाने के लिए तैयार बोकाजान जनजाति छात्रावास के बच्चों के साथ श्री जोगेन्द्र खट्टर जी

आर्यवीर दल दिल्ली प्रदेश का 10 दिवसीय प्रांतीय प्रशिक्षण शिविर उमंग, उत्साह के वातावरण में सम्पन्न

यज्ञ-योग-स्वाध्याय को अपनी दिनचर्या का अंग बनाएं - महाशय धर्मपाल

आर्यवीर दल दिल्ली प्रदेश का प्रांतीय शिविर 24 मई से 2 जून 2019 तक गुरुकुल इंद्रप्रस्थ, फरीदाबाद हरियाणा की पुण्य धरा पर आयोजित किया गया।

शिविर का उद्घाटन

26 मई 2019 की सांध्यकालीन वेला में इस महान शिविर का विधिवत् उद्घाटन किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में सर्वश्री ठाकुर विक्रम सिंह अध्यक्ष, राष्ट्र निर्माण पार्टी, श्री वेदप्रकाश आर्य जी, महामंत्री सार्वदेशिक वीर दल, आचार्य ऋषिपाल जी, प्राचार्य गुरुकुल इंद्रप्रस्थ व श्री जगवीर आर्य, संचालक आर्यवीर दल दिल्ली प्रदेश आदि अनेक अन्य गणमान्य महानुभाव उपस्थित रहे। ठाकुर विक्रम सिंह जी ने आर्यवीरों को प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा कि तपस्या से ही जीवन में सफलता प्राप्त होती है और यह शिविर आपको तप, त्याग, स्वाध्याय और संयम की कला सिखाने के लिए ही आयोजित किया गया है। आप सभी अपने जीवन का विकास करें। श्री वेदप्रकाश जी ने आर्यवीरों को राष्ट्र भक्ति का संदेश देते हुए कहा कि राष्ट्रसेवा के लिए स्वयं को सुयोग्य बनाना जरूरी है। आप यहां पर एक आदर्श दिनचर्या के साथ-साथ देशभक्ति की शिक्षा लेकर अपने जीवन को कुंदन बनाएं।

आशीर्वचन प्रदान करते पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी

परेड नीरिक्षण करते दिल्ली सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी, महामन्त्री विनय आर्य, श्री मनोज गुलाटी एवं श्री देशबन्धु आर्य जी

महाशय जी से आशीर्वाद प्राप्त करते संचालक श्री जगबीर आर्य जी

समापन समारोह के अवसर पर आर्यवीरों का व्यायाम प्रदर्शन

आर्यवीरों को विशेष यज्ञ प्रशिक्षण एवं उपनयन संस्कार

28 एवं 29 मई को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आर्यवीरों को विशेष यज्ञ प्रशिक्षण प्रदान किया गया जिसमें दिल्ली सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी द्वारा बच्चों को यज्ञ के महत्त्व के बारे में विस्तार से बताया गया जिससे प्रभावित होकर आर्यवीरों ने अपने घरों में और क्षेत्रों में यज्ञों के आयोजन करने का खुशी-खुशी संकल्प लिया। 31 मई को स्वामी विदेह योगी जी के निर्देशन में सामूहिक रूप से आर्यवीरों का यज्ञोपवीत संस्कार कराया गया। यज्ञोपवीत के महत्त्व को जानकर सभी आर्यवीर प्रसन्नचित्त हो गए। स्वामी जी ने आर्यवीरों को जीवनभर यज्ञोपवीत धारण करने का तथा न उतारने का संकल्प कराया। इस अवसर पर स्वामी जी ने आर्यवीरों को यज्ञोपवीत की महिमा बताते हुए कहा जो बच्चे अपने गले, हाथ और पैर में काले धागे बांधते हैं वे हमेशा बेमतलब के बंधनों में फंसे रहते हैं। इसलिए यज्ञोपवीत धारण करो और अपने जीवन को यज्ञमय बनाओ।

शिविर का भव्य समापन समारोह

वैसे तो लगातार 10 दिनों तक नियम, व्यवस्था और अनुशासन की डोर में बंधकर अपने घर से अलग रहना बच्चों के लिए कठिन होता है। लेकिन आर्यवीर दल के शिविर में ये 10 दिन कैसे बीत गए बच्चों को यह पता ही नहीं चला और देखते ही देखते वह अवसर आ गया जब 2 जून 2019 को सायं काल इस 10 दिवसीय शिविर का भव्य दीक्षांत एवं विशाल समापन समारोह आयोजित किया गया। इस समारोह का शुभारंभ पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी ने अपने करकमलों से ध्वजारोहण कर किया। इस अवसर पर श्री धर्मपाल आर्य जी,प्रधान दिल्ली सभा, श्री विनय आर्य जी महामंत्री दिल्ली सभा, श्री ठाकुर विक्रम सिंह जी, श्री आनंद कुमार जी,आई.पी.एस, श्री देशबंधु आर्य जी, आचार्य श्री ऋषिपाल जी, श्री मनोज गुलाटी, श्री संजय आर्य जी, श्री रोहताश चौधरी जी (वर्ल्ड रिकार्डर), डॉ. रामभरोसे शाह जी, डॉ. ईश्वर सिंह जी, श्रीमती वीना आर्या जी, स्नेह भाटिया, सहसंचालिका, आ.वी.दल, दिल्ली, श्री हरिओम आर्य, श्री होतीलाल आर्य जी, श्री धर्मवीर जिज्ञासु जी, श्री अमित सेठ जी, स्वामी सुरेन्द्रानन्द जी इत्यादि उपस्थित रहे। उपरोक्त सभी अतिथियों का सैनिक सम्मान, दल के अधिकारियों-सर्वश्री जगवीर आर्य, सुंदर आर्य, जितेंद्र भाटिया, रोहताश आर्य, विरेश आर्य, पवन आर्य, राजेश आर्य, संजय आर्य व बृहस्पति आर्य द्वारा किया गया।

महानुभावों के उद्बोधन

अनुभवों के हिमशिखर पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी ने समस्त आर्यवीरों को आशीर्वाद देते हुए नियमित योग, यज्ञ और स्वाध्याय करते हुए अपने जीवन का सर्वांगीण विकास प्रदान करने की प्रेरणा प्रदान की। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने आर्यवीरों को अपने जीवन के सर्वांगीण विकास के लिए आर्यसमाज की शिक्षाओं व मान्यताओं को धारण करने का संदेश दिया। सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी ने आर्यवीरों को प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा कि प्रत्येक सप्ताह अपने नजदीक के आर्यसमाज में आयोजित होने वाले सत्संग में जाने का नियम आवश्य बनाएं और वहां आर्यवीर दल की शाखा लगाने का नियम बनाएं। राष्ट्र को मजबूत बनाने के लिए शिक्षा और उत्तम स्वास्थ्य दोनों बहुत जरूरी हैं। जो भी विद्यार्थी उच्च शिक्षा आई.ए.एस, आई.पी.एस बनना चाहते हैं उन सुयोग्य विद्यार्थियों को परीक्षाओं की तैयारी हेतु महाशय धर्मपाल प्रतिभा विकास योजना के माध्यम से सुविधा प्रदान की जाएगी। इस अवसर पर श्री रोहताश चौधरी जी, वल्ड रिकार्डर, ठाकुर श्री विक्रम सिंह जी, आचार्य ऋषिपाल जी एवं श्री सुंदर आर्य जी आदि ने बच्चों को अपने आशीर्वचनों से प्रेरणा प्रदान की।

शिविर में यज्ञ प्रशिक्षण प्राप्त करते आर्यवीर

भव्य व्यायाम प्रदर्शन

समापन समारोह का मुख्य आकर्षण आर्यवीरों द्वारा भव्य व्यायाम प्रदर्शन रहा, जिसमें परेड, सर्वांग सुंदर व्यायाम, नियुद्धम(कराटे), दण्ड-बैठक, मार्शल आर्ट, लकड़ी व रस्सा मलखम, आसन व स्तूप, सैनिक शिक्षा, लाठी, भाला, कमांडो प्रदर्शन विशेष था। आर्यवीरों द्वारा किए गए प्रदर्शन को आए हुए सभी अतिथियों एवं अभिवावकों द्वारा सराहा गया व कर्तल ध्वनि द्वारा उत्साहित किया गया। सम्पूर्ण शिविर में सुयोग्य व्यायाम शिक्षिकों (सर्वश्री दिनेश आर्य, धर्मवीर आर्य, अमर आर्य, लक्ष्य आर्य, रोहित आर्य, मोहित आर्य द्वारा प्रशिक्षण एवं बौद्धिक ज्ञान दिया गया। बौद्धिक की कक्षाओं के लिए आचार्य भद्रकाम वर्णी, श्री ज्ञानेंद्र अवाना(पूर्व कमीश्नर दिल्ली पुलिस), डॉ. ईश्वर सिंह, शिवा शास्त्री, सत्यप्रकाश आर्य, सुंदर आर्य का विशेष योगदान रहा। सभी के प्रति कृतज्ञता और आभार व्यक्त करते है।

शिविर को व्यवस्थित रूप से संचालित करने में सर्वश्री सतीश आर्य, नरेंद्र आर्य, आशु आर्य, मुकुन्द आर्य, महेंद्र आर्य, पवन आर्य, दिनेश आर्य, प्रदीप आर्य, पंकज आर्य इत्यादि कार्यकर्त्ताओं का विशेष योगदान रहा।

आर्यवीर दल दिल्ली प्रदेश शिविर के सफल आयोजन हेतु गुरुकुल के आचार्य ऋषिपाल जी व गुरुकुल के अन्य सभी शिक्षकगण व सेवकों का भी विशेष धन्यवाद करता है जिन्होंने हर प्रकार से सहयोग प्रदान किया।

कार्यक्रम के अन्त में श्री दिनेश आर्य जी (प्रधान शिक्षक) द्वारा दल के संचालक श्री जगवीर आर्य जी को ध्वज सौप कर विधिवत शिविर का सफल समापन किया गया।

- बृहस्पति आर्य, महामन्त्री

What is the mind and how to understand it?

Today we are going to learn about the Mind. What is Mind? – It is a psychological term representing the state of our thought processes, intellectual pattern, thinking and imagination. It should be understood differently from the biological term brain. The reference of Mind 'Mann' came out in reference to the material world. It takes us into thinking mode, feeling differently, making expressions, and also receive impressions gathered by the material world around us.

We often say- Today the heart is very sad, the mind is happy today. Today, come to mind that this should be eaten and today the mind does not have anything to eat. We keep having some of these doubts in our daily lives about the mind. It often gets to hear that I broke the stuff because that came in the mind, come to your mind, let's move somewhere. This came in mind, that came in mind. Have you ever wondered what the mind is all about! Our driver? or is it our Operator? We are our boss and are we the slaves of this mind that which we have said? Or is it a part of our body like hands-feet or ears? So where is it located in our body? What is the size, what will it look like, etc. - etc.?

These are all questions which are produced by our own mind. Actually, psychology says that the mind is an engine filled with thoughts that drives energy from the brain. That is, the mind is just an obscure information tool, like gravity inside the Earth. It works as a software in the body, not hardware. It cannot be said as an object because there is no such thing in the world that you can point out that see, this thing is like the mind!

But, in spite of all this, an adulterer raps someone and says that it came to his mind, so he did it. A murderer says that it came to his mind and he murdered someone. Now the point is- when the mind is not present in reality then how such a feeling has come about? The question is confusing. Now, let's assume that the mind does not really exist only its responses are present.

For instance, I asked a person from a distance of him, he shook his hand, that process was due to the expressions occurring in his mind. Because of this, the mind is considered a mysterious science after seeing different practical and physical responses. However, in the era of neuroscience today, we are told that the mind is actually just the brain. But if seen, it is a huge illusion of information and fantasies created by the brain, so it can be understood by taking them out of the science world and going into social science.

Say, if we are passing through a road and see a hotel on the way. The mind will say that something should be eaten. Our feet will start moving towards the hotel. That is, I felt hungary with the sight of a hotel? Now, there is no relation between hunger and mind, there is a sense of taste in the mind. For instance, you have been passing on some way and a young woman appeared or a young man appeared, then the aspiration of the mind will be different, and if you look a little older or sick person, then there will be something else in the mind. The fact is that the whole game is of mind. For this reason, whenever the game of mind appears, do not cooperate with if you do, the mind will start dominating you that time, just stand up and think that it is a game of mind. Otherwise, the responses will increase with cooperation.

The mind will always demand cooperation, sometimes negative cooperation, and sometimes positive cooperation. Likewise whenwe are sitting down, the mind is thinking about many useless things, with whom we have nothing to do, but still, we are cooperating with it. And, when we feel sad, we start to cooperate with it again. After this, we got immersed in deep sorrow. That is, we have given support to it. Do not suppose that you are not involved in this entire process, because without our involvement nothing can happen. We should pause in such situations and say what is all this? Why is this needed? What am I doing all this? What is this madness, which is happening within me and am I being supportive to mind? That is, you must support your mind if it is seeking positive cooperation, wherever it is engaged in negativity, then just start the uncooperative movement with the mind.

Yes, it is right that the mind should be educated, because, with an illiterate mind, we can't survive in this world. Cooperate with the mind to be successful in the work of the market, in the struggle, in the competition, but do not cooperate with the mind during the time of crime, sorrow, jealousy, hatred or anger. Therefore, training the mind is nowhere less than the planets and atoms. Because it takes us into the world of memories, thoughts, and emotions by becoming our operator and then becoming our boss but where any mistake occurs, we are held responsible for it. So, go with the mind, but a little bit of restraint.

- Vinay arya

प्रथम पृष्ठ का शेष

क्योंकि योगाभ्यास करते समय यदि आप निराश हैं या जल्दी-जल्दी में काम निपटाना चाहते हैं, जल्दी-जल्दी दो-चार योगासन किए, उसके बाद जल्दी-जल्दी में नहा-धोकर ऑफिस जाना है, देर हो रही है। तो इससे ऊर्जा बढ़ने के बजाए क्षीण हो रही होती है। किसी भी कार्य को करने में ऊर्जा इतनी कम नहीं होती, जितनी अव्यवस्था से होती है। जो कार्य शांति से व्यवस्था के साथ किया जाता है, तो उसमें ऊर्जा बढ़ती है। इसलिए अगर योगासन भी जल्दी-जल्दी में आप अपने रूटीन के कार्यों की तरह पूरा करते हैं, तो ब्रह्मांड में जो ऊर्जा बह रही है, उसे आप योगाभ्यास के माध्यम से, दृष्टि के माध्यम से, भावनाओं के माध्यम से अपने भीतर नहीं खींच नहीं पाते, आप अपने अंदर उस ऊर्जा शक्ति को नहीं ला पाते, तो जो चुस्ती-फुर्ति प्रसन्नता भीतर आनी चाहिए थी, वह नहीं आ पाती, क्योंकि सारी क्रियाएं आपने हड़बड़ाहट में, जल्दी में ही की होती हैं। यदि आप शरीर को स्वस्थ रखने के लिए योगाभ्यास करें, तो योगाभ्यास करते समय आपके भीतर पूरी मस्ती होनी चाहिए, प्रसन्नता होनी चाहिए। पूरे आनंद के साथ आप योगासन करें, फिर आपको लगेगा कि हर क्रिया से आपको पूरी ऊर्जा मिल रही है।

योगासन करने के नियम

1. योगासनों का अभ्यास किसी सुयोग्य निर्देशक के मार्गदर्शन में करना हितकर है।

2. प्रातःकाल एवं संध्याकाल दोनों समय खाली पेट योगासन करने का सही समय है।

3. योगासन करने के लिए तन-मन से स्वस्थ तथा संतुलित होना चाहिए।

4. शांत एवं स्वच्छ खुले स्थान पर योगाभ्यास करें।

5. योगासन धैर्य एवं दृढ़ता से करें। किसी प्रकार की जल्दबाजी और जबरदस्ती बिल्कुल न करें।

योगासनों के लाभ

1. दैनिक जीवन में नियमपूर्वक योगासन करने से शरीर तथा मन स्वस्थ प्रसन्नता से युक्त रहते हैं।

2. योगासन-शरीर-मन और भावनाओं में संतुलन बनाए रखने के लिए प्रथम उपयोगी साधन हैं।

3. योगासन शरीर को लचीला बनाए रखते हैं, मांस पेसियों और नस-नाड़ियों में रक्त संचार की गतिविधि को ठीक रखने में कारगर सिद्ध होते हैं।

4. योगासन प्रतिदिन के क्रिया-कलापों से उत्पन्न होने वाली शारीरिक- थकावट और मानसिक तनाव को दूर रखने में एक सहायक की भूमिका निभाते हैं।

5. अस्थमा, मधुमेह, रक्तचाप, पाचन-विकार, गठिया आदि रोगों में योगासन चिकित्सा कि अन्य पद्धतियों का एक सफल विकल्प हैं।

6. चिकित्सक वैज्ञानिकों के अनुसार योगासन करने से अंतःस्रावी तंत्रा में संतुलन बना रहता है। जो शरीर के समस्त प्रणालियों और अंगों को ऊर्जा प्रदान करते हैं।

7. योगासन करने से बुरी आदतों से छुटकारा मिलता है और अच्छी आदतों का निर्माण संभव होता है।

योगासन विधि और लाभ

ताड़ासन : विधि- जमीन पर खड़े होकर दोनों पैरों को आपस में मिलाकर पंजों के बल खड़े हो जाएं। तत्पश्चात् दोनों हाथों की हथेलियों को खोलकर दोनों कानों के पास ऊपर की ओर उठावें। इस आसन को कई प्रकार से किया जाता है। कमर से पैर व कंधे तक के हिस्से को पहले की तरह रखते हुए दोनों हाथों को ताड़ पत्रा की तरह आगे-पीछे, दाएं-बाएं, तिरछे कोने तथा चारों तरफ बारी-बारी से फैलाकर करना चाहिए।

लाभ- इस आसन के अभ्यास से शरीर सुडौल बनता है। शरीर का आकार ठीक हो जाता है। शरीर में स्फूर्ति आती है और लंबाई बढ़ती है। यह आसन स्त्रियों के लिए बहुत उपयोगी माना गया है। क्योंकि यह एक ऐसा आसन है जो गर्भावस्था में संतान उत्पत्ति के पांच दस दिन पूर्व तक भी किया जा सकता है।

कोणासन : विधि- दोनों पांवों को फैलाकर बाएं हाथ को नीचे बाएं पांव के पंजे पर रखते हुए दाएं हाथ को ऊपर ले जाएं। ध्यान रहे कि कमर का हिस्सा आगे-पीछे न होने पाए। इसी क्रिया को पुनः बदलकर दूसरी ओर से करना चाहिए।

लाभ- इस आसन के अभ्यास से कमर का दर्द ठीक हो जाता है। शरीर के पुठ्ठे पुष्ट हो जाते हैं। शरीर हल्का हो जाता है और कफ की शिकायत भी दूर होती है। पसलियों का दर्द, फेफड़ों की कमजोरी, फोड़ा-पुफंसी के विकार दूर होते हैं। इस आसन में सबसे बड़ा गुण यह है कि इसके अभ्यास से आदमी लम्बा हो जाता है। ठिगनापन दूर करने के लिए यह आसन उपयोगी है।

पद्मासन : विधि- जमीन पर बैठकर बाएं पैर की एड़ी को दाई जंघा पर इस प्रकार रखें कि एड़ी नाभि के पास आ जाए। इसके बाद दाएं पांव को उठाकर बाई जंघा पर इस प्रकार रखें कि दोनों एड़ियां नाभि के पास आपस में मिल जाएं। मेरूदंड सहित कमर से ऊपरी भाग को पूर्णतया सीध रखें। ध्यान रहे कि दोनों घुटने जमीन से उठने न पाएं। तत्पश्चात् दोनों हाथों की हथेलियों को गोद में भी रख सकते हैं। इसको पुनः पांव बदलकर भी करना चाहिए।

लाभ- यह आसन भी सिद्धासन के समान ही ध्यान, भजन, पूजा-पाठ और प्राणायाम के काम आता है। लेकिन इसमें विशेषता यह है कि रोग दूर करने के लिए यह आसन सिद्धासन से भी कहीं अधिक उपयोगी है। प्राणायाम तो बिना पद्मासन के सिद्ध हो ही नहीं सकता। इस आसन के अभ्यास से कब्ज, बदहजमी और वायु की शिकायत दूर होती है। इससे पाचन शक्ति बढ़ती है, जठराग्नि प्रदीप्त होती है, जंघा और पिंडलियों को अत्यधिक शक्ति मिलती है। यह आसन पुरुषो लिए जितना उपयोगी है, उससे कहीं अधिक स्त्रियों के लिए उपयोगी माना गया है।

वेदों पर व्याख्यान हेतु प्रो. रूपकिशोर शास्त्री जी के जर्मनी यात्रा पर

आर्यसमाज के सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान, गुरुकुल कांगड़ी विश्व विद्यालय के वेद विभागाध्यक्ष प्रो. रूपकिशोर शास्त्री जी को फ्रेंकफर्ट एवं बर्लिन, जर्मनी के दो विश्व विद्यालयों में मुख्य वक्ता के रूप में आमंत्रित किया है। वहां जून 2019 के पहले एवं दूसरे सप्ताह में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में आपके वेदों पर शोध परक व्याख्यान होंगे। गुरुकुल कांगड़ी द्वारा प्रकाशित महर्षि दयानंदकृत वेदभाष्य भी गुरुकुल की तरफ से आप वहां दोनों विश्वविद्यालों को भेंटस्वरूप प्रदान करेंगे। विदेशी धरा पर वेदों के प्रचार-प्रसार के लिए बहुत-बहुत बधाई।

वेदान्त दर्शन एवं छान्दोग्य उपनिषद कक्षाएँ

आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश-1, नई दिल्ली में वेदान्त दर्शन एवं छान्दोग्य उपनिषद् की कक्षाएं शनिवार 1 जून, 2019 से डॉ. देव कृष्ण दाश (उपनिदेशक, वेद संस्थान) द्वारा संचालित हैं। जो महानुभाव इन कक्षाओं का लाभ लेने के इच्छुक हों वे अपना नाम श्री राजीव चौधरी जी (9810014097), श्री अजय कुमार जी (011-46678389) या श्री सुरेन्द्र प्रताप जी से (9953782813) को लिखवाकर पंजीकरण करा लेवें।

वेदान्त दर्शन कक्षा
प्रत्येक मास के प्रथम शनिवार
सायं 5 से 7:15 बजे

छान्दोग्य उपनिषद कक्षा
प्रत्येक मास के चतुर्थ शनिवार
सायं 5 से 7:15 बजे

इन कक्षाओं में जिन प्रतिभागियों की उपस्थिति कम से कम 75% रहेगी रहेगी उन्हें वेद संस्थान की ओर से प्रमाण-पत्रों से पुरस्कृत किया जाएगा।

- राजेन्द्र कुमार वर्मा, मन्त्री

आर्य समाज खजूरी खास का वार्षिक उत्सव समारोह

आर्य समाज खजूरी खास, दिल्ली का 3 दिवसीय वार्षिक उत्सव 24 से 26 जून 2019 तक आयोजित किया जारहा है। इस अवसर पर प्रतिदिन डॉ. शिव पूजन विद्यालंकार के प्रवचन तथा प्रदीप शास्त्री के भजन होंगे। *- अंगद सिंह आर्य, प्रधान*

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज सागरपुर
नई दिल्ली-110046

प्रधान : श्रीमती विद्यावती आर्या
मन्त्री : श्री राकेश कुमार आर्य
कोषाध्यक्ष : श्री शीशपाल

आर्यसमाज मोलरबन्द विस्तार
बदरपुर, नई दिल्ली-110044

प्रधान : श्री शिव कुमार भारद्वाज
मन्त्री : श्री गजेन्द्र सिंह चौहान
कोषाध्यक्ष : श्री रणजीत सिंह रावत

आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश-2
नई दिल्ली-110048

प्रधान : श्री सहदेव नांगिया
मन्त्री : श्री एस. के. कोहली
कोषाध्यक्ष : श्री आर. एस. सलूजा

प्रवेश-परीक्षा का आयोजन

आर्ष गुरुकुल प्रभात आश्रम, टीकरी, भोला झाल, मेरठ, उत्तर प्रदेश में नवीन प्रवेशार्थी छात्रों की प्रवेश-परीक्षा 26 जून से 30 जून 2019 तक सम्पन्न होगी। प्रवेशार्थी छात्र की अर्हता पंचम श्रेणी उत्तीर्ण, मेधावी, स्वस्थ, सुशील एवं आयु 10 वर्ष होनी चाहिए। प्रवेश परीक्षा लिखित एवं मौखिक दो चरणों में एक दिन में ही (प्रातः 8 से 11 तथा सायं 2 से 5 बजे तक) होगी। लिखित परीक्षा में 60 प्रतिशत अंक प्राप्त छात्र ही मौखिक परीक्षा के लिए चुना जायेगा। अधिक जानकारी के लिए मो. 08006702551, 09719325677 से सम्पर्क करें।

- आचार्य

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु. प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु. प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.	प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

खेद व्यक्त : समस्त सम्मानीय पाठकों की सूचनार्थ है कि प्रैस गड़बड़ी के कारण आर्यसन्देश साप्ताहिक का गत अंक सं. 29, दिनांक 10 जून से 16 जून, 2019 प्रकाशित नहीं हो सका। इसके लिए सम्पादक मंडल खेद व्यक्त करता है। *- सम्पादक*

आर्य समाज गोठना, सम्भल का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

18 मई से 20 मई 2019, आर्य समाज गोठना द्वारा तीन दिवसीय वार्षिक उत्सव धूमधाम से मनाया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने किया। यज्ञ के ब्रह्मा स्वामी ब्रह्मानंद वेदभिक्षु जी ने यजमानों को यज्ञमय जीवन जीने की प्रेरणा सहित आशीर्वाद प्रदान किया। आयोजन की प्रशंसा करते हुए श्री धर्मपाल आर्य जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि ऐसे रचनात्मक कार्यक्रमों की समाज को नितांत आवश्यकता है। इस कार्यक्रम के लिए प्रधान जी ने सबको बधाई और शुभकामनाएं दी।

इस 3 दिवसीय आयोजन में आर्य समाज, वेद, महर्षि दयानंद सरस्वती और उनकी शिक्षाओं पर वैदिक विद्वानों द्वारा सरल-सरस भाषा में प्रकाश डाला गया। इस अवसर पर श्री ब्रह्मदेव शास्त्री जी, शास्त्रार्थ महारथी, अलीगढ़, श्री यशपाल शास्त्री जी, श्री धूमसिंह शास्त्री जी, श्री कुंवरपाल शास्त्री जी, श्री छविकृष्ण शास्त्री जी, श्री भगवान सिंह शास्त्री जी, आचार्य सतीश सत्यम जी, आचार्य सुनहरी लाल यादव जी, महामुनि जी, आचार्य विजयदेव जी आदि अनेक विद्वानों ने 16 संस्कार क्यों आवश्यक है? ईश्वर के किस स्वरूप को माने? जीवन में गृहस्थ की भूमिका क्यों आवश्यक है? परिवारों का टूटना, आत्महत्याएं एवं वृद्धजनों की समस्याएं आदि विषयों के समाधान प्रस्तुत किए।

-ओमपाल सिंह एडवोकेट, संयोजक

शोक समाचार

श्री बलदेव राज आर्य का निधन

आर्यसमाज तिलक नगर नई दिल्ली के पूर्व प्रधान, पूर्व मन्त्री, दिल्ली सभा के अन्तरंग सदस्य, दयानन्द आदर्श विद्यालय के पूर्व अधिकारी श्री बलदेव राज आर्य जी का दिनांक 14 जून को अकस्मात् निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ तिलक विहार शमशानघाट पर किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा सोमवार 17 जून को आर्यसमाज बाहरी रिंग रोड, विकासपुरी में सम्पन्न हुई, जिसमें पद्मभूषण महाशय धर्मपाल, सांसद श्री प्रवेश वर्मा, मीनाक्षी लेखी, दिल्ली सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य, महामन्त्री सहित निकटवर्ती अनेक आर्यसमाजों के पदाधिकारियों ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

श्री एस. पी. भाटिया जी का निधन

आर्यसमाज द्वारका सैक्टर-11 के संस्थापक प्रधान एवं मार्गदर्शक श्री सुरेन्द्र पाल भाटिया जी का दिनांक 17 जून की रात्रि में अकस्मात निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ सैक्टर-18 द्वारका स्थित शमशान घाट में किया गया। इस अवसर पर दिल्ली सभा के उप प्रधान श्री शिव कुमार मदान जी एवं निकटवर्ती आर्यसमाजों के अधिकारियों एवं सदस्यों ने पहुंचकर श्रद्धासुमन अर्पित किए।

श्री योगेश्वर चन्द्र आर्य जी का निधन

आर्यसमाज बी ब्लाक जनकपुरी के मन्त्री, प्रचार मन्त्री एवं संस्थापक सदस्य श्री योगेश्वर चन्द्र आर्य जी का 3 जून, 2019 को 88 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 6 जून को आर्यसमाज बी ब्लाक जनकपुरी में सम्पन्न हुई, जिसमें सभा अधिकारियों के साथ-साथ निकटवर्ती अनेक आर्यसमाजों के पदाधिरियों ने पहुंचकर श्रद्धासुमन अर्पित किए।

श्री सुरेश कुमार आर्य को पितृशोक

आर्यसमाज अन्दमान निकोबार के मन्त्री श्री सुरेश कुमार आर्य जी के पूज्य पिता कपड़ा व्यवसायी, लोकतन्त्र सेनानी श्री जगदीश प्रसाद जी का 10 जून को 75 वर्ष की आयु में उनके निवास जरवर नगर बहराईच (उ.प्र.) में निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। श्री प्रसाद जी गौरक्षा आन्दोलन सहित अन्य अनेक सामाजिक सेवाओं के प्रति समर्पित रहे। उनके निधन पर उत्तर प्रदेश शासन की ओर से गार्ड ऑफ आनर दिया गया।

श्री रामदास गिरधर जी का निधन

आर्यसमाज तिलक नगर के मन्त्री श्री रणबीर दुआ के जीजाश्री एवं आर्यसमाज पंजाबी बाग विस्तार के संस्थापक सदस्य श्री रामदास गिरधर जी का 9 जून को निधन हो गया। उनकी स्मृति शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 11 जून को बांके बिहारी मन्दिर में सम्पन्न हुई, जिसमें आर्य केन्द्रीय सभा के उप प्रधान श्री राजेन्द्र दुर्गा सहित निकटवर्ती अनेक आर्यसमाजों के पदाधिरियों ने पहुंचकर श्रद्धासुमन अर्पित किए।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2018-19-2020
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 20-21 जून, 2019
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू (सी.) 139/2018-19-2020
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 19 जून, 2019

प्रथम पृष्ठ का शेष

सात दिवसीय योग-साधना एवं ....

बिहार, ओड़ीसा आदि प्रांतों से शिविरार्थी पधारे और स्वाध्याय शिविर का लाभ उठाया। स्वाध्याय की कक्षाओं का समय सुबह 9.30 से 11.30 तक तथा दोपहर बाद 2 से 4 बजे तक रहा। यज्ञ का समय सुबह 7 से 8.30 बजे तक तथा सायं 6.30 से 7.30 तक था। रात्रि 8.30 बजे से 9.30 बजे तक भजन आदि का कार्यक्रम रहा। इस वर्ष स्वाध्याय शिविर समाप्ति पर परीक्षा का आयोजन किया गया। जिसमें लगभग 70 शिविरार्थियों ने भाग लिया। डॉ. सोमदेव शास्त्री जी ने 50 अंकों का 25 प्रश्नों का अति उत्तम प्रश्न पत्र तैयार किया जो कि कराये गये स्वाध्याय पर आधारित थे। परीक्षा में श्री प्रेम मुनि जी ने 50 अंकों में से 49 प्राप्त कर प्रथम स्थान प्राप्त किया, द्वितीय स्थान 48 अंक प्राप्त कर श्री अभिमन्यु शर्मा व श्री शम्भूनाथ जी ने संयुक्त रूप से प्राप्त किया तथा 47 अंकों तृतीय स्थान श्री यज्ञमुनि जी ने प्राप्त किया। प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले शिवरार्थियों को पुरस्कार भी दिये।

ब्रह्म यज्ञ की व्याख्या में महर्षि दयानंद सरस्वती द्वारा कही गयी कई बातें सामने आई जैसे महर्षि दयानंद एक जगह कहते हैं कि जो व्यक्ति ईश्वर के स्थान पर किसी और की उपासना करता है,वह गधा है। अत: हमें ईश्वर की ही उपासना, आराधना करनी चाहिए। गुरुकुल पौंधा के आचार्य श्री धनंजय जी ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं शिविर संयोजक श्री सुखवीर सिंह आर्य का शिविर आयोजित करने के लिए धन्यवाद एवं आभार व्यक्त किया। सभी शिवरार्थियों ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं गुरुकुल का इस प्रकार का शिविर आयोजित करने के आभार व्यक्त किया तथा आगे भी इस प्रकार के शिविर लगाने की अपील की । सभी को शिविर बहुत अच्छा एवं उपयोगी लगा।

शिविरार्थियों की हृदयानुभूति

1. शिविर उद्देश्यपूर्ण है। महर्षि के ग्रन्थों का स्वाध्याय करने में ऐसे शिविर सहायक है। प्रयास सराहनीय है।

-महात्मा प्रेम मुनि

2. शिविर में संध्या के मंत्रों का अर्थ बहुत अच्छे ढ़ंग से किया गया, वह बहुत अच्छा लगा। पहले ऐसा अर्थ कही नहीं सुना था।

3. आचार्य जी के सानिध्य में हमने अपनी त्रुटियों को गहराई से समझा है। बहुत कम समय में गागर में सागर भर दिया। प्रथम बार संध्या-उपासना एवं संस्कृत (व्याकरण) को समझाने का प्रयास हुआ। गुरुकुल की व्यवस्था अच्छी है। हमें यही पर बहुत कुछ सीखने का मौका मिला। आप सभी का धन्यवाद एवं विद्यार्थियों को शुभाशीष।

-बलवन्त चौहान

4. यहां का जलवायु अच्छा है। शिविर में 'युवाओं' की संख्या अच्छी है। यहां के आचार्यो, ब्रह्मचारियों एवं संयोजकों का व्यवहार अच्छा है। खाने की व्यवस्था अच्छी है। ऐसे शिविर वर्ष में दो बार लगाया जाए तो अच्छा है।

-ईश्वर सिंह

5. इस शिविर में इस बार बहुत सुंदर संध्या के मंत्रों की अर्थ सहित व्याख्या हुई और बाद में हमारी जो परीक्षा हुई वह बहुत ही प्रेरणा देने वाली और हमारा आंकलन करने वाली थी। स्वाध्याय से बहुत लाभ हुआ है। यह कार्य बहुत अच्छा है। यह शिविर आगे भी लगते रहने चाहिए। *- ओमपाल सिंह*

प्रतिष्ठा में,

इस तरह के अनुभव सभी शिविरार्थियों ने व्यक्त किए हैं। किंतु स्थानाभाव के कारण यहां पर कुछ ही लिखे हैं। स्वाध्याय हमारे लिए क्यों आवश्यक है। इसका पता यहीं आकर लगता है। ईश्वर की उपासना क्यों और कैसे करनी चाहिए, इसकी जानकारी स्वाध्याय से ही मिलती है तथा स्वाध्याय हमारे लिए कितना उपयोगी है। इसका पता भी चलता है। अंत में मैं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, आचार्य डॉ. सोमदेव जी शास्त्री, आचार्य धनंजय जी, स्वामी प्रणवानंद सरस्वती, स्वामी चित्तेश्वरानंद जी, गुरुकुल के सभी छात्रों एवं सभी शिविरार्थियों का आभार और धन्यवाद करता हूं। शिविर को सफल बनाने में सब बच्चों का अपना-2 योगदान है। गुरुकुल की सभी व्यवस्थाएं उत्तम रही। तथा शिविर सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। गुरुकुल का 19वां वार्षिक उत्सव भव्य एवं हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।

- सुखवीर सिंह आर्य , संयोजक

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नारायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह